माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

प्रेक्टिस प्रश्न पत्र उच्च माध्यमिक परीक्षा-2022

विषय–हिन्दी

कक्षा-XII

उत्तरमाला

Q.1 **(i)** (अ) इसलिए कि शरीर स्वस्थ रहने के साथ साथ जीवित भी रहे।

(ii) (ब) अपने श्रम से हमें कई चीजें पैदा करनी होंगी

(iii) (द) हमारे लिये दूसरे ने जो परिश्रम किया है अब मात्र उसके सहारे जीवित रहने का अधिकार

(iv) (द) बाप–दादों के पुश्तैनी पैसों से जीवित रहने की

(v) (द)शरीर को निकम्मा बनाया हमें लालची भी बना दिया हैं।

(vi) (द) उपर्युक्त सभी

(vii) (द) उपर्युक्त सभी के बारे मे

(viii) (अ) दिन गिनने की

(ix) (स) विजय

(x) (स) वक्त न होने की

(xi) (द) लक्ष्य पथिक को

(xii) (द) उपर्युक्त सभी

Q.2 **(i)** तीन **(ii)** ध्वनि **(iii)** लक्षणा **(iv)** व्यंजना

(v) यमक **(vi)** श्लेष.

Q.3

(i) (i) AFFIDAVIT – शपथ पत्र (ii) ANNEXURE – संलग्नक

(ii) लेखिका महादेवी वर्मा के संपर्क में आने से पहले भक्तिन का नाम लक्ष्मिन था।

(iii) पत्रकार तीन तरह के होते है–पूर्ण कालिक, अंश कालिक, स्वतंत्र।

(iv) दफ्तर के नए असिस्टेंट का नाम चड्ढा था।

(v) यशोधर बाबू ने दफ्तर में सिल्वर वेडिंग पार्टी में तीस रुपये खर्च किये।

(vi) जूझ कहानी के लेखक ने अपने पढ़ने की इच्छा सबसे पहले अपनी माँ के सामने प्रकट की।

(vii) जूझ कहानी में शरारती बच्चों को गणित के अध्यापक मंत्रीजी ने ठीक किया।

(viii) जूझ कहानी के नायक के पिता का नाम रतन्नप्पा था।

(ix) भगतजी चूरनवाले रोजाना छह आने का चूरन बेचते थे।

(x) घोसले में उसके बच्चें प्रतीक्षा कर रहे होंगे इस बात के ध्यान से चिड़िया के पंखो की गति बढ गयी।

Q.4 किसी खास विचारधारा, मत, घटना पर जनमत बनाने के लिए अभियान चलाने वाली पत्रकारिता को कहते है।

Q.5 जब मीडिया स्थापित व्यवस्था के विकल्प के रूप मे अपनी सोच को व्यक्त करता है, इसे पूँजीपतियों, सरकारों तथा विज्ञापनों का समर्थन प्राप्त नहीं होता, ऐसी पत्रकारिता वैकल्पिक पत्रकारिता कहलाती है .

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

Q.6 ईश्वर ने तो आदमी बनाया था परन्तु आदमी ने उसे हिन्दू, मुसलमान, ईसाइ, सिख और न जाने क्या –क्या बना दिया। कहते है धर्म जोडता है। परन्तु पत्यक्ष अनुभव तो इसके विपरीत है। धर्म ने मनुष्य को बाँटा है। उसमें अनेक जातियाँ पैदा की है। हिन्दू धर्म को ही ले उसमें सवर्ण–असवर्ण अनेक जातियाँ। कुछ को अपने ऊँचें कुल में जन्म लेने का धमण्ड है और कुछ अकारण छोटी जाति में पैदा होने की पीडा झेल रहे है। मै हिन्दू हूँ। तू मुसलमान है – दोनों इसी बात पर झगड रहे है। हिन्दू अयोध्यामें ''ढाचें'' को गिराने में गर्व अनुभव करता हैं तो मुसलमान आहत होता हैं सैकडो सालों से भी यह झगडा सुलझा नही है। बहुत खून–खराबा भी हो चुका है। धर्म के नाम पर स्वयं को औरों से श्रेष्ठ मानने वालों से कबीर ने सीधे शब्दो में पूछा था – जो तु तुरक तुरकिनी जाया। आन मार्ग तें क्यों नही आया।

धर्म और जाति की विषधारी कट्टरता ने भारत की एकता को भीषण क्षति पहुचाई है। धार्मिक आधार अलग होने की भावना ने ही देश के विभाजन का रास्ता तैयार किया था। जाति के आधार पर मनुष्य में भेंद हमें आगे बढने से रोकता है। किसी जाति में पैदा होने से कोई क्यों छोटा हो जाता है और कोई क्यों बडा– इसका कोई तर्कसंगत वैज्ञानिक आधार नही है। अनेक महान् पुरूषों ने मानव–मानव की एकता का संदेश दिया है। परन्तु वह लोगो के दिलों की दूरी को समाप्त नही कर सका है।

भारत ही नही समस्त संसार की समस्याओं का कारण मानवता का यह धर्म और जाति में विभाजन हैं मनुष्य तो एक ही है – यदि हम इस सत्य को स्वीकार कर लें तो हमारी अनेक समस्याएँ आसानी से हल हो सकती है। साहिर लुधियानवी को ये पंक्तियाँ हमें धर्म – जाति की दीवारों से बाहर आकर इसांन बनने का संदेश देती है।

तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा, इंसान की औलाद है इंसान बनेगा।

Q.7 इसका अर्थ है – भेदभाव, अंतर व अलगाववाद को समाप्त करके सभी को एक जैसा समझना। जिस प्रकार बच्चे खेलते समय धर्म, जाति, संप्रदाय, छोटा–बडा, अमीर–गरीब आदि का भेद नही करते, उसी प्रकार कविता को भी किसी एक वाद या सिद्धांत या वर्ग विशेष की अभिव्यक्ति नही करनी चाहिए। कविता में बच्चों के समान रचनात्मक ऊर्जा होनी चाहिए।

Q.8 कवि को अपने प्रिय का उसे सदा घेरे रहना, उसके जीवन पर प्रकाश फैलाए रखना, उस पर ममता उडेलते रहना और कोमलता का स्पर्श देना असहनीय प्रतीत होता है।

Q.9 'गगरी का फूटापन' तथा बैलों का प्यासा रहना' प्रतीकात्मक कथन है। स्वतन्त्र भारत में बनने वाली विकास योजनाओं में भ्रष्टाचार के छेद गगरी के फूटेपन को व्यंजित करते है। इसका परिणाम यह है कि भारतीय जन आज भी भूख–प्यास से त्रस्त है। 'बैलों का प्यासा रहना' इसी सच्चाई की ओर संकेत कर रहा है।

Q.10 पूँजीवादी अर्थशास्त्र के कारण ही बाजार में फैंसी चींजो का प्रचलन बढता है। झूठे विज्ञापन के प्रलोभन के कारण ही लोग बिना आवश्यकता के ही उसके रूप जाल में फँसने लगते है। इसलिए लेखक ने उसे मायावी कह दिया है।

Q.11 इस कहानी में 'मोह का अंतराल' सबसे प्रमुख है। यही मूल संवेदना है क्योकि कहानी में प्रत्येक कठिनाई इसलिए आ रही है क्योंकि यशोधर बाबू अपने पुराने संरकारों, नियमों व कायदों से बाँधे रहना चाहते है और उनका परिवार, उनके बच्चे वर्तमान में जी रहै है जो ऐसा कुछ गलत भी नहीं है। यदि यशोधर बाबू थोड़े से लचीले स्वभाव के हो जाते, तो उम्हें बहुत सुख मिलता और जीवन भी खुशी से व्यतीत करते।

Q.12 सौंदलगेकर लेखक के गाँव के स्कूल में मराठी पढ़ाने वाले अध्यापक थे। वे कविता बहुत अच्छे ढंग से पढ़ाते थे। पढ़ाते समय वे स्वयं रम जाते थे। उनके पास सुरीला गला, छंद की बढ़िया गति और रसिकता थी। उन्हें पुरानी व नयी मराठी कविताओं के साथ–साथ अंग्रेजी कविताएँ भी कंठस्थ थीं। उन्हें छदों की लय, गति, ताल इत्यादि अच्छी तरह आते थे। वे स्वयं भी कविता रचते थे तथा उन्हें सुनाते थे।

Q.13 सहर्ष स्वीकारा है' कविता गजानन माधव 'मुक्तिबोध' के काव्य–संग्रह 'भूरी–भूरी खाक–धूल' से ली गई है। इसमें कवि ने अपने जीवन के समस्त अनुभवों, सुख–दुख, संघर्ष–अवसाद, उठा–पटक आदि स्थितियों को सहर्ष स्वीकारने की बात कहता है, क्योंकि इन सभी के साथ वह अपनी अज्ञात प्रियतमा का जुड़ाव अनुभव करता है। उसका जो कुछ है वह सब उसकी अज्ञात प्रियतमा को अच्छा लगता है। कवि अपनी स्वाभिमानयुक्त गरीबी, जीवन के गंभीर अनुभव, व्यक्तित्व की दृढ़ता, मन में उठती भावनाएँ जीवन में मिली उपलब्धियाँ सभी के लिए अपनी अज्ञात प्रियतमा को प्रेरक मानता है। कवि को लगता है कि वह अपनी अज्ञात प्रियतमा के प्रेम के प्रभावस्वरूप कमजोर पड़ता जा रहा है। उसे अपना भविष्य अंधकारमय लगता है। वह अंधकारमय गुफा में एकाकी जीवन जीना चाहता है, इसके लिए वह अपनी अज्ञात प्रियतमा को पूरी तरह से भूल जाना चाहता है।

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

अथवा

कवि ने रूपक के माध्यम से कवि–कर्म को कृषक के समान बताया है। किसान अपने खेत में बीज बोता है, वह बीज अंकुरित होकर पौधा बनता है तथा पकने पर उससे फल मिलता है जिससे लोगों की भूख मिटती है। इसी तरह कवि ने कागज को अपना खेत माना है। इस खेत में भावों की आँधी से कोई बीज बोया जाता है। फिर वह कल्पना के सहारे विकसित होता है। शब्दों के अंकुर निकलते ही रचना स्वरूप ग्रहण करने लगती है तथा इससे अलौकिक रस उत्पन्न होता है। यह रस अनंतकाल तक पाठकों को अपने में डुबोए रखता है। कवि ने कवि–कर्म को कृषि–कर्म से महान बताया है क्योंकि कृषि–कर्म का उत्पाद निश्चित समय तक रस देता है, परंतु कवि–कर्म का उत्पाद अनंतकाल तक रस प्रदान करता है।

Q.14 लुट्टन पहलवान के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

व्यक्तित्व–लुट्टन सिंह लंबा–चौड़ा व ताकतवर व्यक्ति था। वह लंबा चोंगा पहनता था तथा अस्त–व्यस्त पगड़ी बाँधता था। वह इकलौती एवं अनाथ संतान था। अतः उसका पालन–पोषण उसकी विधवा सास ने किया था।

भाग्यहीन–लुट्टन का भाग्य शुरू से ही खराब था। बचपन में माता–पिता गुजर गए। पत्नी युवावस्था में ही चल बसी थी। उसके दोनों लड़के महामारी की भेंट चढ़ गए। इस प्रकार वह सदैव पीड़ित रहा।

साहसी–लुट्टन साहसी था। उसने अपने साहस के बल पर चाँद सिंह जैसे पहलवान को चुनौती दी तथा उसे हराया। उसने 'काला खाँ' जैसे पहलवान को भी चित कर दिया। महामारी में भी वह सारी रात ढोल बजाता था।

संवेदनशील – गाँव में महामारी के समय निराशा का माहौल था। ऐसे में वह रात में ढोल बजाकर लोगों में जीने के प्रति उत्साह पैदा करता था।

अथवा

गली–मोहल्ला, गाँव–शहर हर जगह लोग गरमी से भुन–भुन कर त्राहिमाम–त्राहिमाम कर रहे थे। जेठ मास भी अपना ताप फैलाकर जा चुका था और अब तो आषाढ़ के भी पंद्रह दिन बीत चुके थे। कुएँ सूखने लगे थे, नलों में पानी नहीं आता था। खेत की माटी सूख–सूखकर पत्थर हो गई थी। पपड़ी पड़कर अब खेतों में दरारें पड़ गई थीं। झुलसा देने वाली लू चलती थी। ढोर–ढंगर प्यास से मर रहे थे, पर प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। निरुपाय से ग्रामीण पूजा–पाठ में लगे थे। अंत में इंद्र से वर्षा के लिए प्रार्थना करने इंदर सेना भी निकल पड़ी थी।

Q.15 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू किशनदा के मानस पुत्र लगते हैं। उनका व्यक्तित्व किशनदा की प्रतिच्छया है। कम उम्र में यशोधर पहाड़ से दिल्ली आ गए थे तथा किशनदा ने ही उन्हें आश्रय दिया था। उन्हें सरकारी विभाग में नौकरी दिलवाई। इस तरह जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वाले व्यक्ति से प्रभावित होना स्वाभाविक है। किशनदा की निम्नलिखित आदतों का यशोधर बाबू ने जीवन भर निर्वाह किया ऑफिस में सहयोगियों के साथ संबंध,सुबह सैर करने की आदत,पहनने–ओढ़ने का तरीका,किराए के मकान में रहना,आदर्श बातें करना,किसी बात को कहकर मुसकराना,सेवानिवृत्ति के बाद गाँव जाने की बात कहना आदि

यशोधर बाबू ने रामलीला करवाना आदि भी किशनदा से ही सीखा। वे अंत तक अपने सिद्धांतों पर चिपटे रहे।

अथवा

लेखक के पिता ने खेत के काम के नाम पर उसका स्कूल जाना बंद कर दिया। उसे लगता था कि पढ़ लिखकर वह काम नहीं करेगा। माँ–बेटे के प्रयास असफल हो गए। उनके गाँव में दत्ता साहब सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे। लेखक का पिता उनका दबाव मानता था। माँ–बेटे ने दत्ताजी राव से सहायता माँगी। दत्ताजी राव ने पिता को खूब डाँट लगाई तथा उसके कहने पर लेखक का पिता उसे पढ़ाने के लिए तैयार हो जाता है। पाठशाला में लेखक अन्य बच्चों के संपर्क में आकर पढ़ने लगता है। इस प्रकार दत्ता जी राव लेखक के जीवन में बड़ा बदलाव लेकर आए। इनके बिना लेखक की पढ़ाई नहीं हो सकती थी और वह अनपढ़ ही रह जाता।

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

Q.16 गजानन मानव मुक्तिबोध का कवि परिचय

जीवन परिचय – प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि गजानन माधव 'मुक्तिबोध' का जन्म मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के श्योपुर नामक स्थान पर 1917 ई० में हुआ था। इनके पिता पुलिस विभाग में थे। अतः निरंतर होने वाले स्थानांतरण के कारण इनकी पढ़ाई नियमित व व्यवस्थित रूप से नहीं हो पाई। 1954 ई. में इन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम०ए० (हिंदी) करने के बाद राजनाद गाँव के डिग्री कॉलेज में अध्यापन कार्य आरंभ किया। इन्होंने अध्यापन, लेखन एवं पत्रकारिता सभी क्षेत्रों में अपनी योग्यता, प्रतिभा एवं कार्यक्षमता का परिचय दिया। मुक्तिबोध को जीवनपर्यत संघर्ष करना पड़ा और संघर्षशीलता ने इन्हें चिंतनशील एवं जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने को प्रेरित किया। 1964 ई० में यह महान चिंतक, दार्शनिक, पत्रकार एवं सजग लेखक तथा कवि इस संसार से चल बसा।

रचनाएँ – गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की रचनाएँ निम्नलिखित हैं

(i) कविता–संग्रह– चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी–भूरी खाक–धूल।

(ii) कथा–साहित्य – काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी।

(iii) आलोचना – कामायनी–एक पुनर्विचार, नई कविता का आत्मसंघर्ष, नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, समीक्षा की समस्याएँ एक साहित्यिक की डायरी।

(iv) भारत–इतिहास और संस्कृति।

काव्यगत विशेषताएँ – मुक्तिबोध प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रमुख सूत्रधारों में थे। इनकी प्रतिभा का परिचय अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' से मिलता है। उनकी कविता में निहित मराठी संरचना से प्रभावित लंबे वाक्यों ने आम पाठक के लिए कठिन बनाया, लेकिन उनमें भावनात्मक और विचारात्मक ऊर्जा अटूट थी, जैसे कोई नैसर्गिक अंतरस्रोत हो जो कभी चुकता ही नहीं, बल्कि लगातार अधिकाधिक वेग और तीव्रता के साथ उमड़ता चला आता है। यह ऊर्जा अनेकानेक कल्पना–चित्रों और फैंटेसियों का आकार ग्रहण कर लेती है। इनकी रचनात्मक ऊर्जा का एक बहुत बड़ा अंश आलोचनात्मक लेखन और साहित्य–संबंधी चिंतन में सक्रिय रहे। ये पत्रकार भी थे। इन्होंने राजनीतिक विषयों, अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य तथा देश की आर्थिक समस्याओं पर लगातार लिखा है। भाषा–शैली– इनकी भाषा उत्कृष्ट है। भावों के अनुरूप शब्द गढ़ना और उसका परिष्कार करके उसे भाषा में प्रयुक्त करना भाषा–सौंदर्य की अद्भुत विशेषता है। इन्होंने तत्सम शब्दों के साथ–साथ उर्दू, अरबी और फ़ारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

अथवा

धर्मवीर भारती –लेखक परिचय

जीवन परिचय–धर्मवीर भारती का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले में सन 1926 में हुआ था। इनके बचपन का कुछ समय आजमगढ़ व मऊनाथ भंजन में बीता। इनके पिता की मृत्यु के बाद परिवार को भयानक आर्थिक संकट से गुजरना पड़ा। इनका भरण–पोषण इनके मामा अभयकृष्ण ने किया। 1942 ई० में इन्होंने इंटर कॉलेज कायस्थ पाठशाला से इंटरमीडिएट किया। 1943 ई० में इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से बी०ए० पास की तथा 1947 में (इन्होंने) एम०ए० (हिंदी) उत्तीर्ण की।

तत्पश्चात इन्होंने डॉ० धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में 'सिद्ध–साहित्य' पर शोधकार्य किया। इन्होंने 'अभ्युदय' व 'संगम' पत्र में कार्य किया। बाद में ये प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक के पद पर कार्य करने लगे। 1960 ई० में नौकरी छोड़कर 'धर्मयुग' पत्रिका का संपादन किया। 'दूसरा सप्तक' में इनका स्थान विशिष्ट था। इन्होंने कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, पत्रकार तथा आलोचक के रूप में हिंदी जगत को अमूल्य रचनाएँ दीं। इन्हें पद्मश्री, व्यास सम्मान व अन्य अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया। इन्होंने इंग्लैंड, जर्मनी, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि देशों की यात्राएँ कीं। 1997 ई० में इनका देहांत हो गया।

रचनाएँ – इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं –

कविता संग्रह – कनुप्रिया, सात–गीत वर्ष, ठंडा लोहा। कहानी–संग्रह–बंद गली का आखिरी मकान, मुर्दो का गाँव, चाँद और टूटे हुए लोग। उपन्यास–सूरज का सातवाँ घोड़ा, गुनाहों का देवता

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

गीतिनाट्य – अंधा युग।

निबंध संग्रह – पश्यंती, कहनी–अनकहनी, ठेले पर हिमालय।

आलोचना प्रगतिवाद – एक समीक्षा, मानव–मूल्य और साहित्य।

एकांकी संग्रह – नदी प्यासी थी।

साहित्यिक विशेषताएँ – धर्मवीर भारती के लेखन की खासियत यह है कि हर उम्र और हर वर्ग के पाठकों के बीच इनकी अलग–अलग रचनाएँ लोकप्रिय हैं। ये मूल रूप से व्यक्ति स्वातंत्र्य, मानवीय संबंध एवं रोमानी चेतना के रचनाकार हैं। तमाम सामाजिकता व उत्तरदायित्वों के बावजूद इनकी रचनाओं में व्यक्ति की स्वतंत्रता ही सर्वोपरि है। इनकी रचनाओं में रुमानियत संगीत में लय की तरह मौजूद है। इनकी कविताएँ कहानियाँ उपन्यास, निबंध, गीतिनाट्य व रिपोर्ताज हिंदी साहित्य की उपलब्धियाँ हैं।

इनका लोकप्रिय उपन्यास 'गुनाहों का देवता' एक सरस और भावप्रवण प्रेम–कथा है। दूसरे लोकप्रिय उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' पर हिंदी फिल्म भी बन चुकी है। इस उपन्यास में प्रेम को केंद्र में रखकर निम्न मध्यवर्ग की हताशा, आर्थिक संघर्ष, नैतिक विचलन और अनाचार को चित्रित किया गया है। स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद गिरते हुए जीवन–मूल्य, अनास्था, मोहभंग, विश्व–युद्धों से उपजा हुआ डर और अमानवीयता की अभिव्यक्ति 'अंधा युग' में हुई है। 'अंधा युग' गीति–साहित्य के श्रेष्ठ गीतिनाट्यों में है। मानव–मूल्य और साहित्य पुस्तक समाज–सापेक्षिता को साहित्य के अनिवार्य मूल्य के रूप में विवेचित करती है।

भाषा–शैली – भारती जी ने निबंध और रिपोर्ताज भी लिखे। इनके गद्य लेखन में सहजता व आत्मीयता है। बड़ी–से–बड़ी बात को बातचीत की शैली में कहते हैं और सीधे पाठकों के मन को छू लेते हैं। इन्होंने हिंदी साप्ताहिक पत्रिका, धर्मयुग, के संपादक रहते हुए हिंदी पत्रकारिता को सजा–सँवारकर गंभीर पत्रकारिता का एक मानक बनाया। वस्तुतः धर्मवीर भारती का स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद के साहित्यकारों में प्रमुख स्थान है।

Q.17

प्रसंगः प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2 में संकलित कविता 'आत्मपरिचय' से उद्धृत है। इसके रचयिता हिंदी साहित्याकाश के प्रसिद्ध कवि हरि वंश राय बच्चन है। कवि ने व्यक्तिगत जीवन की वेदना को व्यक्त किया है।

व्याख्या : बच्चन जी कहते हैं कि मैं संसार में जीवन का भार उठाकर घूमता रहता हूँ। इसके बावजूद मेरा जीवन प्यार से भरा–पूरा है। जीवन की समस्याओं के बावजूद कवि के जीवन में प्यार है। उसका जीवन सितार की तरह है जिसे किसी ने छूकर झंकृत कर दिया है। फलस्वरूप उसका जीवन संगीत से भर उठा है। उसका जीवन इन्हीं तार रूपी साँसों के कारण चल रहा है। वह स्नेह रूपी मदिरा में डूबे रहते है अर्थात प्रेम किया है तथा बाँटा है। उसने कभी संसार की परवाह नहीं की। संसार के लोगों की प्रवृत्ति है कि वे उनको पूछते हैं जो संसार के अनुसार चलते हैं तथा उनका गुणगान करते हैं। कवि अपने मन की इच्छानुसार चलता है, अर्थात वह वही करता है जो उसका मन कहता है।

विशेष :

1. कवि ने निजी प्रेम को स्वीकार किया है।

2. संसार के स्वार्थी स्वभाव पर टिप्पणी की है।

3. 'स्नेह–सुरा' व 'साँसों के तार' में रूपक अलंकार है।

4. 'जग–जीवन', 'स्नेह–सुरा' में अनुप्रास अलंकार है।

5. खड़ी बोली का प्रयोग है।

6. 'किया करता हूँ', 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति में गीत की मस्ती है।

अथवा

प्रसंगः प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग–2* में संकलित 'कैमरे में बंद अपाहिज' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस कविता के रचयिता रघुवीर सहाय हैं। इस कविता में कवि ने मीडिया की संवेदनहीनता का चित्रण किया है। उसने यह बताने का प्रयत्न किया है कि मीडिया के लोग किस प्रकार से दूसरे के दुख को भी व्यापार का माध्यम बना लेते हैं। "

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

व्याख्या : कवि कहता है कि दूरदर्शन वाले अपाहिज का मानसिक शोषण करते हैं। वे उसकी फूली हुई आँखों की तसवीर को बड़ा करके परदे पर दिखाएँगे। वे उसके होंठों पर होने वाली बेचौनी और कुछ न बोल पाने की तड़प को भी दिखाएँगे। ऐसा करके वे दर्शकों को उसकी पीड़ा बताने की कोशिश करेंगे। वे कोशिश करते हैं कि वह रोने लगे। साक्षात्कार लेने वाले दर्शकों को धैर्य धारण करने के लिए कहते हैं।

वे दर्शकों व अपाहिज दोनों को एक साथ रुलाने की कोशिश करते हैं। तभी वे निर्देश देते हैं कि अब कैमरा बंद कर दो। यदि अपाहिज अपना दर्द पूर्णतरू व्यक्त न कर पाया तो कोई बात नहीं। परदे का समय बहुत कीमती है। कार्यक्रम संचालक यह घोषणा करता हैं कि आप सभी दर्शक सामाजिक उद्देश्य से भरपूर कार्यक्रम देख रहे थे। इसमें थोड़ी–सी कमी यह रह गई कि हम आप दोनों को एक साथ रुला नहीं पाए। फिर भी यह कार्यक्रम देखने के लिए आप सबका धन्यवाद!

विशेष : **1.** अपाहिज की बेचौनी तथा मीडिया व दर्शकों की संवेदनहीनता को दर्शाया गया है।

2. मुक्त छंद है।

3. उर्दू शब्दावली का सहज प्रयोग है।

4. 'परदे पर' में अनुप्रास अलंकार है।

5. व्यंग्यपूर्ण नाटकीयता है।

Q.18

प्रसंगः उपर्युक्त गद्यांश हिंदी साहित्याकाश की सशक्त लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा रचित गद्य रचना भक्तिन से अवतरित किया गया है .प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका ने भक्तिन की विशेषता का उल्लेख किया है .

व्याख्याः भक्तिन के संदर्भ में हनुमान जी का उल्लेख इसलिए हुआ है क्योंकि भक्तिन लेखिका महादेवी वर्मा की सेवा उसी निरूस्वार्थ भाव से करती थी, जिस तरह हनुमान जी श्री राम की सेवा निरूस्वार्थ भाव से किया करते थे।भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था जो वैभव, सुख, संपन्नता आदि का प्रतीक, जबकि भक्तिन की अपनी वास्तविक स्थिति इसके ठीक विपरीत थी। वह अत्यंत गरीब, दीन–हीन महिला थी, जिसे वैभव, सुख आदि से कुछ लेना–देना न था। यही उसके नाम और जीवन में विरोधाभास था।लेखिका का मानना है कि नाम व गुणों में साम्यता अनिवार्य नहीं है। अकसर देखा जाता है कि नाम और गुणों में बहुत अंतर होता है। 'शांति' नाम वाली लड़की सदैव झगड़ती नजर आती है, जबकि 'गरीबदास' के पास धन की कमी नहीं होती।लेखिका ने भक्तिन को इसलिए समझदार माना है क्योंकि भक्तिन अपना असली नाम बताकर उपहास का पात्र नहीं बनना चाहती। उस जैसी दीन महिला का नाम 'लक्ष्मी' सुनकर लोगों को हँसने का अवसर मिलेगा।

विशेषः भाषा शुद्ध साहित्यिक एवं विषयानुकुल है

भाषा सरल ,सुबोध और ग्राह्य गुण से संपन्न है

भक्तिन के चरित्र को सशक्त ढंग से उभारा है

अथवा

प्रसंगः उपर्युक्त गद्यांश हिंदी साहित्याकाश की सशक्त लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित गद्य रचना शिरीष के फूल से अवतरित किया गया है .प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने कालिदास की श्रेष्ठता के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया है

व्याख्या : लेखक ने कालिदास को श्रेष्ठ कवि माना है क्योंकि कालिदास के शब्दों व अर्थों में सामंजस्य है। वे अनासक्त योगी की तरह स्थिर–प्रज्ञता व विदग्ध प्रेमी का हृदय भी पा चुके थे। श्रेष्ठ कवि के लिए यह गुण आवश्यक है।

ओम कवि शब्दों की लय, तुक व छंद से संतुष्ट होता है, परंतु विषय की गहराई पर ध्यान नहीं देता है। हालाँकि कालिदास कविता के बाहरी तत्वों में विशेषज्ञ तो थे ही, वे विषय में डूबकर लिखते थे।

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

लेखक का मानना है कि शकुंतला सुंदर थी, परंतु देखने वाले की दृष्टि में सौंदर्यबोध होना बहुत जरूरी है। कालिदास की सौंदर्य दृष्टि के कारण ही शकुंतला का सौंदर्य निखरकर आया है। यह कवि की कल्पना का चमत्कार है।

दुष्यंत ने शकुंतला का चित्र बनाया था, परंतु उन्हें उसमें संपूर्णता नहीं दिखाई दे रही थी। काफी देर बाद उनकी समझ में आया कि शकुंतला के कानों में शिरीष पुष्प नहीं पहनाए थे, गले में मृणाल का हार पहनाना भी शेष था।

विशेषः भाषा शुद्ध साहित्यिक एवं विषयानुकुल है

भाषा सरल, सुबोध और ग्राह्य गुण से संपन्न है

कालिदास के महान कवि होने के पक्ष में सशक्त ढंग से तार्किक विचार प्रस्तुत किये है

Q.19

राजस्थान सरकार

कार्यालय निदेशक, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, जयपुर, राजस्थान

पत्र क्रमांक दिनांक–.....

विज्ञप्ति

प्रदेश के समस्त ग्राम पंचायत मुख्यालयों पर दिनांक .....जुलाई से .....अगस्त .....के मध्य प्रशासन गाँवों के संग अभियान' के अंतर्गत दो दिवसीय शिविर आयोजित होंगे। पंचायत वार विस्तृत कार्यक्रम उपखंड स्तर से निर्धारित किए जायेंगे। इन शिविरों में समस्त सरकारी विभागों के अधिकारी ग्रामीण जनता की समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण करेंगे। अतरू इसका लाभ उठाएँ व अन्य संबंधित को भी अवगत कराएँ।

(क, ख, ग)

निदेशक

अथवा

राजस्थान सरकार

राजस्व विभाग ,शासन सचिवालय, जयपुर

पत्र क्रमांक दिनांक .....

अधिसूचना

राजस्थान भू–राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 3 अंतर्गत उपधारा 16 (प) वे (पप) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए भू–नामांतरण जो कि ग्राम पंचायतों की प्रदत्त शक्तियों से अनुशंसित था, के स्थान पर नायब तहसीलदारों व तहसीलदारों के अधिकार क्षेत्र में होगा।

यह अधिसूचना दिनांक .....से ..... तक प्रभावी रहेगी।

क, ख, ग (ह०)

उपशासन सचिव

प्रतिलिपि सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु

निजी सचिव, मुख्यमंत्री, राज० सरकार।

निजी सचिव, मुख्यसचिव, राज० सरकार।

निजी सचिव, राजस्वमंत्री राज सरकार।

सचिव, नियामक राजस्व मंडल, अजमेर।

निदेशक, राजकीय मुद्रणालय, जयपुर को प्रेषित कर लेख है कि अधिसूचना का प्रकाशन आगामी राजपत्र में किया जाए।

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

Q.20

आतंकवाद की समस्या

आज विश्व आतंकवाद की समस्या से जूझ रहा है। आतंकवाद का सबसे क्रूर हमला सितम्बर 2001 में अमेरिका पर हुआ जिसने सारे विश्व को हिलाकर रख दिया । इसकी परिणति अफगानिस्तान के साथ युद्ध से हुई। इस घटना के लिए ओसामा बिन लादेन को जिम्मेदार ठहराया गया, जिसके षड्यंत्र के फलस्वरूप अमेरिका के प्रसिद्ध 'ट्विन टावर' ध्वस्त हो गए और हजारों व्यक्तियों को जान से हाथ धोना पड़ा था। इसी घटना के फलस्वरूप अमेरिका को आतंकवाद का घिनौना चेहरा वास्तविक रूप में नजर आया। यद्यपि भारत उसे अनेक वर्षो से पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद के बारे में लगातार सूचित कर रहा था।

भारत गत 15–20 वर्षो से आतंकवाद का दुष्प्रभाव झेल रहा है। पहले पूर्वोत्तर भारत में तथा फिर एक दशक तक पंजाब इसका केन्द्र बना। वहाँ हजारों बेगुनाह व्यक्ति मारे गए। इस आतंकवाद में पंजाब के कुछ गुमराह युवक भी शामिल थे। सरकार काफी प्रयासों के पश्चात् वहाँ शान्ति का वातावरण बना। अब वहाँ शान्ति है तथा लोकतान्त्रिक व्यवस्था पूरी तरह कार्य कर रही है।

वर्तमान समय में आतंकवादी गतिविधियों का केन्द्र जम्मू–कश्मीर है। वहाँ एक प्रकार से पाकिस्तान अपने देश के युवकों के लालच देकर और धर्म के नाम पर उन्हें किसी भी तरह भारत की सीमा में प्रवेश करा देता है। पाकिस्तान के तथाकथित राष्ट्रपति द्वारा विश्व समुदाय को दिए गए शान्ति के आश्वासनों के बावजूद वह इस प्रकार की आंतकवादी हरकतों को बढ़ावा देने में संलग्न है। उसकी कथनी और करनी में भारी अन्तर है। जम्मू–कश्मीर में प्रतिदिन किसी–न–किसी आतंकवादी हमले की सूचना पढ़ने–सुनने को मिल जाती है। इन दुष्प्रवृत्तियों ने जम्मू–कश्मीर विधानसभा चुनाओं को बेअसर करने का हरसंभव प्रयास किया, पर वे सफल हो न पाए। वहाँ चुनाव ठीक–ठाक ढंग से सम्पन्ना हो गए। इससे उनकी बौखलाहट और भी बढ़ गई।

इन आतंकवादी घटनाओं के केन्द्र बदलते रहते है। जम्मू–कश्मीर में तो गतिविधियाँ चरम–सीमा पर हो रही हैं, इसके साथ–साथ देश के अन्य हिस्सों को भी आतंकवादी अपना निशाना बना रहे है। 13 दिसम्बर, 2001 को भारत की संसद पर इन आतंकवादियों ने हमला बोल दिया। हमारे सुरक्षाकर्मियों के साहस और सूझ–बूझ से बहुत बड़ा हादसा टल गया। इसमें 6–7 सैनिक शहीद हुए तथा आतंकवादी मारे गए। आतंक वादियों की हिम्मत तो देखिए कि वे लोकतन्त्र पर किस ढंग से आक्रमण करते है। मार्च 2002 को 'अक्षरधाम' मन्दिर को निशाना बनाया गया। इसके पश्चात 24 नवम्बर 2002 को रघुनाथ मंदिर भी उनकी हिट लिस्ट में आ गया। इस प्रकार आतंकवादी भारत की साम्प्रदायिकता एकता को भंग करने के प्रयास में जुटे है। वे देश को धर्म के आधार पर बाँटकर अपन उल्लू सीधा करना चाहते है।

इस समय भारत बुरी तरह से आतंकवाद की जकड़ में है। भारत सरकार बार–बार आतंकवाद जड़ से मिटाने का संकल्प तो व्यक्त करती है, पर कोई कारगर कार्यवाही नहीं कर पाती है। एक बार हिम्मत करके उसने सीमा पर भारतीय सेनाएँ तैनात भी कीं, पर पाँच–छः महीने के पश्चात अंतर्राष्ट्रीय दबाव में आकर उन्हें वापस बुला लिया। इस बार जनता को बड़ी आशा थी कि प्रधानमन्त्री सरकार 'आर–पार' की लड़ाई अवश्य लड़ेगी। इस प्रकार की कमजोरी आतंकवादियों के हौंसले बुलन्द कर देती है। कश्मीर की वर्तमान पी.डी.पी सरकार आतंकवादियों की रिहाई करके एक गलत संदेश दे रही है।

आतंकवाद की समस्या पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। तदर्थवाद से काम चलने वाला नहीं है। इन आंतकवादी संगठनों को निर्दयता से कुचला जाना आवश्यक है। आतंकवादी गति विधियों के प्रति किसी भी प्रकार का नरम रूख अपनाना आत्म हत्या के समान है। आतंकवाद के नासूर का इलाज करना ही होगा। आतंकवाद देश की प्रगति में सबसे बड़ा रोड़ा है। वह हजारों लोगों की बलि ले चुका है। सहनशीलता की भी एक सीमा होती है, इसके बाद सहनशीलता कायरता कहलायेगी हमारी। दिनकर ने कहा भी है– 'सहन शीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है। बलिका दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है।'

संचार साधनों का सामाजिक जीवन पर प्रभाव

भारतीय समाज में पिछले दस–बारह वर्षो में केबल संस्कृति की वजह से अनेक परिवर्तन आए है। रंगीन टेलीविजन पर जब से लोगों ने अनेक टी.वी. चैनलों पर विभिन्न कार्यक्रम देखने में अधिक रूचि दिखाई है, तब से इसका भारतीय संस्ड्डति पर प्रभाव निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। केबल संस्ड्डति से भारतीय समाज में आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षण वृद्धि हुई है। भारतीय संस्ड्डति पर इसका दुष्प्रभाव ही अधिक देखने को मिलता है।

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

पिछले कुछ वर्षो में युवावर्ग में फैशन के प्रति अभिरूचि बढ़ी है। देश के बड़े शहरों में युवावर्ग अपनी भाषा अपनी वेशभूषा और अपना खान–पान आदि सब कुछ भूल गया है तथा पाश्चात्य खान–पान को अपना रहा है। महानगरों में युवतियों नग्नता को फैशन का पर्यायवाची मानने लगी है। वे स्ततंत्रता के स्थान पर स्वच्छन्द जीवन–शैली को महत्ता देने लगी है। युवक भी फैशन के मामले में पीछे नहीं है, परन्तु केबल संस्कृति की कृपा से आधुनिक युवतियाँ मॉडल की तरह देह प्रदर्शित करने वाले वस्त्र धारण करने लगी है।

केबल संस्ड्डति के प्रभाव के फलस्वरूप महानगरों में पंचतारा होटलों में आए दिन डांस पार्टियाँ आयोजित होती है। जिनमें धनी तथा उच्च मध्यम वर्ग के स्त्री–पुरूष मदिरापान कर नृत्य के नाम भौंडा प्रदर्शन करते है। आजकल कोई भी पार्टी शराब (कॉकटेल) के बिना सफल नहीं मानी जाती। इसका कारण एक सीमा तक केबल संस्कृति ही है। समाज का अधिकाशं हिस्सा 'ईट, ड्रिक एण्ड बी मैरी के सिद्धान्त में विश्वास करने लगा है।

समाज में व्यक्ति आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है। लोग टेलीविजन पर विभिन्न कार्यक्रम देखने में इतने व्यस्त रहते है कि उनकी दुनिया केवल टेलिविजन तक सीमित हो गई है। बच्चे तथा किशोर भी टेलिविजन के कार्यक्रम घंटों तक देखते रहते है जिससे उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। बच्चों तथा किशोरों में भी स्वच्छन्दता की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। विद्यार्थियों को अपने पाठ्यक्रम की अपेक्षा टेलीविजन प्रदर्शित कार्यक्रम अधिक याद रहते है।

''कौन बनेगा करोड़पति'' कार्यक्रम ने लोगों के बीच में जबर्दस्त प्रभाव डाला था। टी.वी. चैनल 'स्टार प्लस' पर प्रदर्शित इस कार्यक्रम के प्रदर्शन के दौरान अन्य सभी गतिविधियाँ ठप्प हो जाती थी। स्कूल, कॉलेजों, दफ्तरों व बाजारों में अक्सर इसी कार्यक्रम की चर्चा होती थी। आजकल इसी चैनल पर प्रसारित मनोरंजक धारावाहिक ''क्योंकि सास भी कभी बहू थी'' व ''कहानी घर–घर की'' इस समय लोगों के बीच में बहुत लोकप्रिय है। ऐसे कार्यक्रम लोगों के सामाजिक जीवन पर प्रभाव डालने में समर्थ है। इस समय बहुत अधिक केबल चैनल प्रसारित हो रहे है। स्टार समूह के स्टार प्लस, स्टार स्पोर्ट्स, स्टार मूवीज, ई.एस.पी.एन. अन्य चैनल भी लोगों के बीच लोकप्रिय है, किन्तु सार्थक कार्यक्रम नहीं है।

केबल संस्कृति के कारण विवाहोत्तर सम्बन्धों में भी बहुत परिवर्तन दिखाई देता है। अधिकाशं सीरीयलों में विवाहोतर सम्बन्धों को दिखाया जाता है। अब समाज में विवाहित स्त्री–पुरूषों का अन्य लोगों से अनैतिक सम्बन्ध होना वैवाहिक जीवन के लिए खतरे की घंटी नहीं माना जाता। इसके अतिरिक्त समाज में प्रेम के नाम पर वासना–तृप्ति का प्रयास भी खुलेआम दिखाई देता है। इस प्रकार खुलेपना के नाम पर चरित्र को खोटा समझा जाने लगा है तथा मर्यादित परम्परा का पालन करने वाले को पिछडा हुआ माना जा रहा है। केबल संस्कृति के प्रभावस्वरूप जल्दी से जल्दी कुबेर बनने की भावना भी समाज में बलवती हुई है। अधिकाशं युवक किसी प्रकार भी रातों–रात करोड़पति बन जाना चाहते है। इसके लिए वे अपराध की कांटो भरी राह पर भी चलने के लिए तैयार रहते है। समाज में अपराधों का ग्राफ निरन्तर बढ़ाने में केबल संस्कृति का बहुत योगदान है। केबल टी. वी. पर अनेक समाचार चैनल इस समय लोकप्रिय हो रहे है। जैसे 'आज तक' स्टार न्यूज, जी न्यूज। इन सबमें उत्तम दर्जे के समाचार हमें प्राप्त होते है। विभिन्ना राजनेताओं से समय–समय पर साक्षात्कार चुनाव–प्रसारण आदि बहुत आकर्षक होता है। विभिन्ना खेल चैनलो जैसे स्टार स्पोर्टस, ई.एस.पी.एन., टैन स्पार्टस, डी.डी. स्पोर्टस से हम घर बैठे ही विभिन्ना अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं का आनन्द ले सकते है। कुछ अच्छे मनोंजक व ज्ञानवर्धक कार्यक्रम भी हमें इन चैनलो पर देखने को मिल जाते है।

इस प्रकार केबल चैनल के नुकसान और लाभ दोनों ही है। यह हमारे ऊपर है कि हम इसे किस प्रकार लेते है। अगर हम सीमित केबल टी. वी. देखें तो ठीक है, अन्यथा हम इसके गुलाम बन सकते है, जो हमारे लिए बहुत नुकसानदायक है।

वर्तमान समय में दूरदर्शन का प्रयोग निरंतर बढ़ता चला जा रहा है। दूरदर्शन लोकप्रियता की चरम सीमा को छूता प्रतीत होता है। दूरदर्शन के कार्यक्रम जन–जन में लोकप्रिय हो रहे है। वर्तमान समय में दूरदर्शन की लोकप्रियता चरम सीमा पर है। अब तो इसकी घुसपैठ प्रत्येक परिवार में हो चुकी है। शहरों के साथ–साथ इसके कार्यक्रम गॉवों में भी अत्यन्त रूचि के साथ देखे जाते है। इतने लोकप्रिय माध्यम का हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। दूरदर्शन के साथ जब से केबल संस्कृति जुड़ी है। तब से इसके कार्यक्रमों में विविधता एवं नवीनता की बाढ़ आ गई है। अब 300 चैनल तक देखे जा सकते है। आप अपना मनचाहा कार्यक्रम देखने को स्वतंत्र हैं इससे दूरदर्शन की पहुँच दूर–दूर तक होती चली गई है।

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

दूरदर्शन का प्रभाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसने हमारे मनोरंजन का पक्ष अत्यंत सुदृढ़ हुआ है। दूरदर्शन पर अनेक प्रकार के रोचक कार्यक्रम चुनकर हम अपना मनोरंजन कर सकते है। फीचर फिल्मों के अतिरिक्त टेली फिल्में, धारावाहिक, चित्रहार, चित्रगीत, संगीत–नाटक, कवि–सम्मेलन, खेल–जगत आदि से हमारा पर्याप्त मनोरंजन होता है।

दूरदर्शन शिक्षा का भी सशक्त माध्यम बन गया है। इस पर औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा दी जा रही है। इस पर स्कूली विद्यार्थियों के लिए नियमित पाठों का प्रसारण किया जाता है। इसके अतिरिक्त किसानों के लिए ड्डषि–दर्शन अनपढ़ों के लिए साक्षरता के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है। इस प्रकार घर बैठे ही सभी को ज्ञानवर्धक कार्यक्रम देखने को मिल जाते है। दूरदर्शन के माध्यम से परिवार के प्रयोग में आने वाले नवीनतम उत्पादों की जानकारी पूरे विवरण के साथ घर बैठे ही मिल जाती है। दूरदर्शन की सामग्री अधिक ग्राह्य एवं स्पष्ट प्रभाव डालने वाली होती है। इसका प्रभाव अधिक व्यापक होता है। अतः इस बारे में अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है।

दूरदर्शन ने हमारे पारिवारिक जीवन पर जो बुरा प्रभाव डालता है वह है हिंसा और अश्लीलता का भौंडा रूप। आजकल प्रसारित होने वाले अधिकाशं मनोरंजक कार्यक्रमों पर पाश्चात्य प्रभाव की झलक अधिक दिखाई देती है। इसके परिणामस्वरूप उनमें हिंसा को बहुत बढ़ा–चढ़ा कर दिखाया जाता है। इससे हमारे दैनिक जीवन में हिंसा का समावेश होता जा रहा है। चोरी–डकेती की घटनाओं में वृद्धि भी इसी का दुष्परिणाम है। दूरदर्शन पर इस समय जो पारिवारिक सीरियल दिखाए जा रहे। उनमें दो बातें उभरकर सामने आ रही है।

(1) विवाहेत्तर सम्बन्धों का चित्रण (2) व्यवसाय से जुड़ी महिलाओं में अत्यधिक ईर्ष्या भावना का होना। इस प्रवृत्ति के कारण वे अपना सहज कोमलता का रूप खोती चली जा रही है। और एक दुष्ट प्रवृत्ति उनके अन्दर पनपती चली जा रही है जो हमारी भारतीय संस्कृति के विपरीत है। विवाहोत्तर सम्बन्ध हमारे परिवारों की सुख शान्ति में आग लगाने का कार्य कर रहा है। आधुनिकता के नाम पर इन्हें परोसा जा रहा है। पर इससे हमारे पारिवारिक जीवन पर बड़ा दुष्प्रभाव पड रहा है। दूरदर्शन के अनेक कार्यक्रमों से जहाँ बच्चों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि हुई है, वहीं उनका स्वभाव चिड़चिड़ा होता जा रहा है। वे अंतर्मुखी बनते जा रहे है। सामाजिकता की भावना का लोप होना एक अशुभ संकेत है। यह भी सही है कि बच्चों की तर्कशक्ति बढ़ी है। उनकी मान्यताओं में भी अंतर आया है। अब वे किसी बात पर आँखमूँद कर विश्वास नहीं करते है।

दूरदर्शन नैतिकता के मूल्यों में भी गिरावट ला रहा है। अब ये मूल्य अपना स्वरूप बदल रहे है। अश्लीलता का बोलबाला बढ़ रहा है। दूरदर्शन के अश्लील दृश्य इसको बढ़ावा दे रहे है। इनका हमारी संस्कृति से मेल नहीं बैठता है। दूरदर्शन ने हमारे सामाजिक दायरों को समेट कर रख दिया है। अब हम दूरदर्शन कार्यक्रम देखन में अधिक व्यस्त रहने लगे है।

यही सही है कि वर्तमान परिस्थितियों में हम दूरदर्शन के कार्यक्रमों को देखने से स्वयं को बचाकर नहीं रख सकते है। पर अब हमारे पास सही कार्यक्रम का चुनाव की सुविधा उपलब्ध है। हम किसी एक चैनल पर प्रसारित कार्यक्रम को देखने के लिए विवश कतई नहीं है। इस प्रकार प्रभाव से हम बच भी नहीं सकते। अतः हमें दूरदर्शन के स्तर में सुधार लाना होगा ताकि इसके दुष्प्रभावों से बच सकें।

राष्ट्र निर्माण में युवा विद्यार्थियों पीढ़ी का योगदान

जब समाज निर्माण के सदंर्भ में युवा–पीढ़ी की भूमिका की चर्चा की जाती है तो स्वभावतः अनेक प्रश्न उत्पन्ना होने लगते है। इनमें महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि युवा पीढ़ी में किन व्यक्तियों को रखा जाए। आज सामान्य रूप से युवा–पीढ़ी के अन्तर्गत विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले युवक–युवतियों को लिया जाता है, किन्तु युवा–पीढ़ी के अन्तर्गत उन युवक–युवतियों को भी परिगणित किया जा सकता है जो स्कूल–कॉलेजों की अपेक्षा खेतों, कारखानों, मिलों, फैक्ट्रियों आदि में कार्यरत है।

आशय यह है कि छात्र–छात्राओं के अतिरिक्त युवक–युवतियों को भी इसी पीढ़ी में लिया जाता है। वैसे युवा अथवा वृद्ध होना जीवन के बीते हुए वर्षो पर निर्भर नहीं करता। ऐसे अनेक प्रौढ़ अथवा अधिक उत्साह, उल्लास, ऊर्जा है जो आलस्य व निष्क्रियता से ग्रस्त कहे जा सकते है। यहाँ हम यही कहना चाहते है कि यौवन व वृद्धावस्था का प्रत्यक्ष संबन्ध व्यक्ति की मानसिकता के साथ होता है। युवावस्था को यौवन के उपवन का वसन्त कहा जाता है। जिस प्रकार वसन्त ऋतु आने पर सम्पूर्ण प्रकृति के भीतर हर्षोल्लास की तरंगे उठने लगती है। रूप या सौंदर्य की अनेक छवियाँ अनायास प्रस्फुटित होने लगती है। उसी प्रकार यौवन आने पर व्यक्ति के जीवन में एक प्रकार की आशा, अभिलाषा, कर्म–प्रेरणा तथा

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

निर्माणकारी क्षमता अंकुरित होने लगती है। जहाँ नई पीढ़ी जीवन के अनेक क्षेत्रों में अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी का स्वाभाविक रूप से अनुकरण करती है। वहाँ अनेक क्षेत्रों में उसका पुरानी पीढ़ी के साथ मतभेद तथा कभी–कभी संघर्ष भी देखने को मिलता है। दोनों पीढ़ियाँ अपने–अपने स्थान पर स्वयं को अधिक गुणवान् और समर्थ समझती है। इसका परिणाम होता है दोनों पीढ़ियों में पारस्परिक संघर्ष।

नई पीढ़ी समाज के भीतर जहाँ परिवर्तन के हर नए मोड़ का स्वागत करते समय अतिरिक्त भावुकता का परिचय देती है, वहाँ पुरानी पीढ़ी अपनी समीओं के कारण यथास्थितिवादी, अपरिवर्तनशील तथा पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होती है। दो पीढ़ियों का यह वैचारिक मतान्तर प्रायः प्रत्येक युग में रहा है। प्रकृति का यह स्वाभाविक नियम है कि वृक्ष की शाखाओं पर लहराने वाले पत्ते पतझड़ आने पर झर जाते है, उनके स्थान पर नए पत्ते प्रकृति की शोभा और सज्जा करने लगते है। बाह्य प्रकृति का यह नियम मानव के भीतर भी देखा जा सकता है। अभिप्राय यह है कि नवीन और पुरातन एक–दूसरे के विलोम न होकर परस्पर पूरक हुआ करते है।

मध्य युग तक का इतिहास साक्षी है कि इन दोनों पीढ़ियों में सहअस्तित्व व सद्भाव बराबर बना रहा है। जैसे–जैसे आधुनिकता, विज्ञान पर आश्रित भौतिकवाद तथा पाश्चात्य जीवन–मूल्यों की छाप भारतीय जीवन पर पड़ती गई, वैसे–वैसे इन दोनों पीढ़ियों के मध्य होने वाली स्थिति का लाभ राजनीति ने सदा ही उठाया है। विगत शताब्दी में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर घटित होने वाली घटनाएँ यही प्रमाणित करती है। एक समय था जबकि देश की प्रत्येक प्रगति, चाहे वह धार्मिक हो या आर्थिक, चाहे वह मानसिक हो या वैदेशिक, सभी राजनीति के अन्तर्गत आती थी, परन्तु आज के युग में राजनीति शब्द का अर्थ इतना संकुचित हो गया है कि जब इसका अर्थ केवल वर्तमान सरकार का विरोध करना ही समझा जाता है।

भारतवर्ष एक गणतन्त्र देश है। जनता के चुने हुए प्रतिनिधि देश की नीति का संचालन करते है। आज प्रत्येक व्यक्ति शासन में अपना प्रतिनिधित्व चाहता है। यह गंदी दलबंदी ही आज की राजनीति है। जिससे दूर रहने के लिए विद्यार्थियों से कहा जाता है। विद्यार्थियों के पास उत्साह है, उमंग है, परन्तु साथ–साथ अनुभवहीनता के कारण जब शासन उनके विरूद्ध कार्यवाही करता है, तब उस समय उन पथभ्रष्ट करने वाले नेताओं के दर्शन भी नहीं होते स्वतन्त्रता संग्राम में विद्यार्थियों को भाग लेने के लिए प्रेरणा देने वाले आज उन्हे राजनीति से दूर रहने के लिए क्यों कहते है? निःसंदेह विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेने का अधिकार है, पर देश की रक्षा के लिए, उनके सम्मान एवं संवर्धन के लिए, न कि शासन के कार्य में विघ्न डालने और देश में अशान्ति फैलाने के लिए।

विद्यार्थी का परम कर्तव्य विद्याध्ययन ही है, इसमें दो मत नहीं हो सकते। उन्हें अपनी पूरी शक्ति ज्ञानार्जन में ही लगानी चाहिए। अब भारतवर्ष स्वतंत्र है। अपने देश की सर्वांगीण उन्नाति के लिए एवं पूर्ण समृद्धि के लिए हमें अभी बहुत प्रयत्न करने हैं। देश को योग्य इंजीनियरों, विद्वानों डाक्टरों, साहित्य मर्मज्ञ विद्वानों, वैज्ञानिकों और व्यापारियों की आवश्यकता है, इसकी पूर्ति विद्यार्थी ही करेंगे। विद्यार्थियों की देशभक्ति देश की रचनात्मक सेवा करने में है, न कि विरोध प्रदर्शन में। हमारा देश अज्ञानांधकार के गहन गर्त में शताब्दियों से विलीन है। विद्यार्थी ही देश में ज्ञान रश्मियों के प्रसार में पूर्ण सहयोग दे सकते है। विद्यार्थी राष्ट्र की अमूल्य निधि है। देश की समस्त आशाएँ इन्ही पर निर्भर हैं। उन्हें अपने समय, अपनी शक्ति, अपनी कार्यक्षमता और अपने बोद्धिक बल का देश की दुर्गन्धपूर्ण राजनीति में अपव्यय नहीं करना चाहिए। देश सेवा ही उनकी राजनीति है। उनका विधिवत्पूर्ण परिश्रम से अध्ययन करना ही देश की प्रगति करना है।

विज्ञान वरदान है या अभिशाप

विज्ञान का शाब्दिक अर्थ होता है– विशेष या विश्लेषित ज्ञान मानव आदिकाल से नये आविष्कार करता रहा है और विकास की एक–एक सीढ़ी तय करता रहा है। आविष्कारों के बल पर ही उसने अपना जीवन सजाया सँवारा है। आज हम जिस युग में सांस ले रहे है वह विज्ञान का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान की उपलब्धियों के प्रभाव को देखा जा सकता है। वैज्ञानिक अनुसंधानों ने मानव जीवन को पहले की तुलना में अधिक सुरक्षित और आरामदेह बना दिया है। अनुसांधन बहुविध, बहुआयामी और प्रत्येक क्षेत्र में किए गए हैं।

दुनिया के विभिन्ना देशों के विकास पर विहंगदृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि आज जिस देश ने वैज्ञानिक उपलब्धियों के सहारे अपना औद्योगीकरण कर लिया है, उसी को उन्नात देश कहा जाता है। जिस देश में औद्योगीकरण का स्तर नीचा है वह देश पिछड़ा हुआ देश कहा जाता है। वैज्ञानिक आविष्कारों और औद्योगीकरण के आधार पर ही किसी देश की प्रगति को आंका जा रहा है। विज्ञान ने मानव को पूरी तरह बदल दिया है।

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

आज वैज्ञानिक गतिविधियों को देखने से विदित नहीं होता है कि विज्ञान मानव के लिए वरदान है या अभिशाप यह तो सर्वमान्य है कि विज्ञान ने मानव को बहुत अधिक सुख सुविधाएँ प्रदान की है। दैनिक जीवन से लेकर उसके जीवन से सम्बधित तमाम घटनाओं तक विज्ञान का प्रभाव परिलक्षित होता है। प्राचीन काल में मानव लम्बी दूरियाँ तय करने में कठिनाई महसूस करता था किन्तु आज मोटरकार, रेलगाड़ी और वायुयान की मदद से अगर वह चाहे तो हजारों मील की दूरी कुछ ही घंटों में तय कर सकता है। वैज्ञानिक साधनों ने दुनिया के देशों को बहुत आस पास ला दिया है। दूरी की दृष्टि से आज तो अमेरिका, जापान, इग्लेण्ड वैसे ही है जैसे कि कोलकाता, मुम्बई, दिल्ली। टेलीफोन का आविष्कार भी मानव के लिए वरदान सिद्ध हुआ है। हजारों मील दूरी बैठे हुए व्यक्ति से हम टेलीफोन से बातचीत कर सकते है। इसके आविष्कार से व्यापारिक क्रिया–कलापों में भी काफी सहायता मिली है। व्यापारिक सम्बन्धों की स्थापना में इससे काफी सहायता मिली है।

मनोरंजन के लिए विज्ञान ने तमाम साधन प्रस्तुत किए है। टेलीविजन विज्ञान की आधुनिकतम प्रगति है। देश विदेश में घटित घटनाएँ टेलीविजन के माध्यम से हम देख सकते है। तमाम खबरें सुन सकते है। घर बैठे रेडियो खोलकर हम तरह–तरह की खबरें ओर संगीत सुन सकते है। आज तो प्रतीत होता है कि अगर वैज्ञानिक आविष्कारों को मानव जीवन से हटा दिया जाए तो मानव जीवन शून्य हो जाएगा। दुनिया मानव की मुठ्ठी में हो गई है। सम्पूर्ण संसार उसके आस पास नजर आ रहा है। पृथ्वी एवं आकाश के रहस्य का उदघाटन विज्ञान से हुआ है।

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई है। आज मानव द्वारा हृदय एवं मस्तिष्क का आपरेशन भी संभव हो गया हैं। अनेक जानलेवा बीमारियाँ से छुटकारा मिलने लगा है। चिकित्सा विज्ञान तें अंधों को आँखें दी है और बहरों को कान। उसने जीवन को सुन्दर सुखद और दीर्घ बना दिया है।

परन्तु आज मानव के सामने एक बड़ा प्रश्न उपस्थित हो गया है कि विज्ञान के नित नए आविष्कारों के कारण यह बदली हुई स्थिति उसके लिए वरदान होगी या अभिशाप? यह प्रश्न इसलिए खड़ा हुआ है क्योंकि एक ओर जहाँ मानव विज्ञान का उपयोग अपने हित में कर रहा है। वहीं दूसरी और भंयकर अस्त्र–शस्त्रों द्वारा मानव की सभ्यता, संस्ड्डति और उसकी अब तक अर्जित समस्त पूँजी को भस्मीभूत कर देने की तैयारी भी कर रहा है। आज एक देश दूसरे देश को वैज्ञानिक शक्ति के आधार पर दबा रहा है। जिस देश के पास जितनी अधिक वैज्ञानिक शक्ति है, वही देश अपने को गौरवान्वित मान रहा है। अमेरिका, ब्रिटेन आदि राष्ट्र विश्व में इसलिए आगे है, क्योंकि उनके पास वैज्ञानिक शक्तियाँ हैं। वहीं दूसरी ओर आतंकवादी देशों ने वैज्ञानिक हथियारों के बल–बूते पर समूचे विश्व को दहशत जदा बना दिया है। जो वैज्ञानिक विकास मानव के सुख का साधन बन सकते थे, वहीं विज्ञान मानव सभ्यता के विनाश का कारण बन गया है।

विज्ञान जो वरदान होना चाहिए था, युद्ध विषयक अस्त्र–शस्त्रों के आविष्कारों से मानव सभ्यता के लिए अभिशाप बन गया है। मानव सभ्यता और संस्कृति खतरे में पड़ गई है। वैज्ञानिक साधनों धर्म और आध्यात्मिक मूल्यों को नष्ट कर उपभोक्तावादी एवं भौतिकतावादी बना दिया है। जैसे–जैसे विश्व संस्कृति उपभोक्तावादी और भौतिकतावादी होती जा रही है नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अप संस्कृति फल–फूल रही है। मानव समुदाय को चाहिए कि इस 'विज्ञान' रूपी जिन्न को बोतल में कैद रहने दे अर्थात अपने नियंत्रण में रखे। जिस दिन विज्ञान रूपी यह 'जिन्न' बोतल से बाहर आ गया 'वरदान' लगने वाला विज्ञान अभिशाप बन जाएगा।

चरमोन्नात जग में जब कि आज विज्ञान ज्ञान,
यह भौतिक साधन, यंत्र, वैभव, महान
सेवक हैं विद्युत, वाष्प शक्ति, धन बल नितांत
फिर क्यों जग में उत्पीड़न ? जीवन यों अशांत

वर्तमान युग में धर्म और विज्ञान के बीच जबरदस्त संघर्ष हो रहा है विज्ञान का प्रभाव आज विश्वव्यापी है। धीरे–2 लोगों में नास्तिकता आती जा रही है। इसका एकमात्र कारण है विज्ञान की उन्नाति आज से दो शताब्दी पूर्व जनता विज्ञान और वैज्ञानिकों को घृणा से देखती थी। उनका विचार था कि विज्ञान धार्मिक ग्रन्थों के प्रतिकूल है। आज भी कुछ ऐसी विचारधारा जनता में है। मनुस्मृति में धर्म की परिभाषा इस प्रकार दी गई है–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शोचमिन्द्रिय निग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशंक धर्म लक्षणम्

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper

धैर्य, क्षमा, पवित्रता, आत्मसंयम, सत्य, अक्रोध आदि–आदि सद्‌गुणों को धारण करना ही वास्तविक धर्म है। धर्म का उद्‌देश्य लोक कल्याण है। सच्चा धार्मिक व्यक्ति सम्पूर्ण संसार के कल्याण की कामना करता है। धर्म और विज्ञान दोनों ने ही मानव जाति के उत्थान में पूर्ण सहयोग दिया है। धर्म ने मानव ने हृदय को परिष्कृत किया और विज्ञान ने बुद्‌धि को। यदि मनुष्य इस समाज में सामान्य स्थान प्राप्त करके जीवनयापन कर सकता है, तो उसे सांसारिक सुख–शांति भी आवश्यक है। अतः संसार में धर्म और विज्ञान दोनों ही मानव कल्याण के लिए आवश्यक तत्व हैं।

धर्म मानव हृदय की उच्च और पवित्र भावना है। धार्मिक भावना से मनुष्य में सात्विक प्रवृत्तियों का उदय होता है। धर्म के लिए मनुष्य को शुभ कर्म करते रहना चाहिए और अशुभ कार्यो को त्याग देना चाहिए। धार्मिक मनुष्य को भौतिक सुखों की अवहेलना करनी चाहिए। वह कर्म के मार्ग से विचलित नहीं होता। हिन्दू धर्म के अनुसार मनुष्य की आत्मा अमर है और शरीर नाशवान है। मृत्यु के पश्चात भी मनुष्य अपने सूक्ष्म शरीर से अपने किए हुए शुभ और अशुभ कर्मो का फल भोगता है। धार्मिक लोगों का विचार है कि इस अल्प जीवन में सुख भोगने की अपेक्षा पुण्य कार्य करना चाहिए।

जो धर्म समाज को उन्नाति की ओर ले जा रहा था, वह अंध विश्वास और अन्ध श्रद्धा में ढलकर पतन का कारण बन गया। अंधविश्वास के अंधकार से निकलकर मानव ने बुद्धि और तर्क की शरण ली। लोगों में आँखों देखी बात पर विश्वास करने प्रवृत्ति जागृत हुई। विज्ञान की भी मूल प्रवृत्ति यही है, धर्मग्रन्थों में लिखी हुई या उपदेशों द्वारा कही हुई बात को वह सत्य नहीं मानता, जब तक कि तर्क द्वारा नेत्रों के प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा तर्क सिद्ध न हो जाए।

धर्म की आड़ लेकर जो अपने स्वार्थ साधन में संलग्न थे, उनके हितों को विज्ञान से धक्का पहुँचा, वे वैज्ञानिकों के मार्ग में विघ्न उपस्थित करने लगे, ''उधरे अन्त न होई निबाहू''। अब धर्म के बाह्य आडम्बरों की पोल खुल गई तो जनता सत्य के अन्वेषण में प्राणप्रण से लग गई। जो सुख और समृद्धि धार्मिकों की स्वर्गीय कल्पना में थे, उन्हे वैज्ञानिकों ने आपनी खोजों से इस संसार में प्रस्तुत कर दिखाया। धर्म ईश्वर की पूजा करना था। विज्ञान ने प्रकृति की उपासना की। विज्ञान ने पांचो तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) को अपने वश में किया। उसने अपनी रूचि के अनुसार भिन्ना–भिन्ना सेवायें लीं, इस प्रकार मानव ने जीवन और जगत को सुखी और समृद्ध बना दिया। वैज्ञानिकों ने अपने अनेक आश्चर्यजनक परीक्षणों से जनता में तर्क बुद्धि उत्पन्ना करके उनके अन्धविश्वासों को समाप्त कर दिया। आज के वैज्ञानिक मानव ने क्या नहीं कर दिखाया।

यह अनुज,
जिसका गगन में जा रहा है यान
काँपते जिसके करों को देखकर परमाणु।
खोल कर अपना हृदय गिरि, सिंधु, भू, आकाश,
है सुना गये परदे, रहा अब क्या अज्ञेय
किन्तु नर को चाहिये नित विघ्न कुछ दुर्जेय।

धर्म का स्वरूप विकृत होकर जिस प्रकार बाह्य आडम्बरों में परिवर्तित हो गया था, उसी प्रकार विज्ञान भी अपनी विकृति की और है। विज्ञान ने जब तक मानव की मंगल कामना की, तब तक वह उत्तरोत्तर उन्नातिशील रहा जो विज्ञान मानव–कल्याण के लिए था, आज उसी से मानवता भयभीत है। परमाणु आयुधों के विघ्वंसकारी परीक्षणों ने समस्त मानव जगत को भयभीत कर दिया है। धर्म के विस्तृत स्वरूप ने जनता को मूर्खता की ओर अग्रसर किया था, विज्ञान का दुरूपयोग जनता को प्रलय की ओर अग्रसर कर रहा है।

वर्तमान समय में लोगों ने धर्म और सम्प्रदाय को एक मान लिया है। साम्प्रदायिक बुद्धि विनाश का रास्ता दिखाती है। यह ऐसी प्रतिगामी शक्ति है जो हमें पीछे की ओर धकेलती हैं। मानव को इस प्रवृत्ति से बचना है। अपने–अपने धर्मो का पालन करते हुए भी हमें टकराव की स्थिति उत्पन्ना होने नहीं देनी चाहिए। मानव धर्म को स्वीकार कर लेने से सभी शान्तिपूर्वक रह सकेंगे। धर्म के नाम पर हमारे देश का पहले ही विभाजन हो चुका है, अब हमें इसे और विभाजित करने के प्रयास नहीं करने चाहिए।

मानव को वर्तमान युग की मांग की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। समस्त विश्व के मानव हमारे भाई है, यही भाव विकसित करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। धर्म कभी संकुचित दृष्टिकोण अपनाने के लिए नहीं कहता, अपितु वह तो हमें विशालता प्रदान करता है।

धर्म के नाम पर राजनीति करना अत्यन्त घृणित कार्य है। सरकार भी धर्म को राजनीति से पृथक करने का कानून बनाने पर विचार कर रही है। हमारे संविधान में प्रत्येक नागरिक को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की गई है। प्रत्येक मानव को अपने विश्वास के अनुसार धर्म अपनाने की पूरी छूट है।

node06\B0BA-BB\Kota\Board Material\Hindi\RBSE Sample Paper